विषय-सूची

पहला अध्याय

पालि भाषा

'पालि' शब्दार्थ-निर्णय—पालि भाषा—भारतीय भाषाओं के विकास में पालि का स्थान—पालि किस प्रदेश की मूल भाषा थी? पालि और वैदिक भाषा—पालि और संस्कृत—पालि और प्राकृत भाषाएँ: विशेषत: अर्द्ध-मागधी, शौरसेनी और पैशाची—पालि के ध्वनि-समूह का परिचय—पालि का शब्द-साधन और वाक्य-विचार—पालि भाषा के विकास की अवस्थाएँ—पालि भाषा और साहित्य के अध्ययन का महत्त्व, उपसंहार।

पृष्ठ १–७३

दूसरा अध्याय

पालि साहित्य का विस्तार, वर्गीकरण और काल-विभाग

पालि साहित्य का उद्भव और विकास—पालि साहित्य का विस्तार—सामान्यत: दो विभागों में उसका वर्गीकरण—पालि या पिटक साहित्य—अनुपालि या अनुपिटक साहित्य—पिटक साहित्य के ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय और काल-क्रम——अनुपिटक साहित्य का काल-विभाग, उपसंहार।

पृष्ठ ७४–११०

तीसरा अध्याय

सुत्त-पिटक

पालि त्रिपिटक कहाँ तक मूल, प्रामाणिक बुद्ध-वचन है? सुत्त-पिटक—विषय, शैली और महत्त्व—सुत्त-पिटक के अन्तर्गत ग्रन्थों के वस्तु-विधान का संक्षिप्त परिचय और उनका साहित्यिक और ऐतिहासिक महत्त्व:—

अ. दीघ-निकाय

आ. मज्झिम-निकाय

इ. संयुत्त-निकाय
ई. अंगुत्तर-निकाय
उ. खुद्दक-निकाय पृष्ठ १११–३०१

चौथा अध्याय

विनय-पिटक

त्रिपिटक में विनय-पिटक का स्थान—विनय-पिटक का विषय और संकलन-काल—विनय-पिटक के भेद—विनय-पिटक के नियम—विनय-पिटक के वस्तु-विधान का संक्षिप्त परिचय—सुत्त-विभंग—खन्धक—परिवार, उपसंहार। पृष्ठ ३०२–३३३

पाँचवाँ अध्याय

अभिधम्म-पिटक

अभिधम्म-पिटक—रचना-काल—विषय, शैली और महत्त्व—अभिधम्म-पिटक के ग्रन्थ—पालि अभिधम्म पिटक और सर्वास्तिवाद सम्प्रदाय के अभिधर्म पिटक की तुलना—अभिधम्म-पिटक के ग्रन्थों के वस्तु- विधान का संक्षिप्त परिचय:—

अ. धम्मसंगणि
आ विभंग
इ. धातुकथा
ई. पुग्गलपञ्ञत्ति
उ. कथावत्थु
ऊ. यमक
ए. पट्ठान

पृष्ठ ३३४—४६४

छठा अध्याय

पूर्व-बुद्धघोष-युग

(१०० ई० पू० से ४०० ई. तक)

नेत्तिपकरण—पेटकोपदेश—मिलिन्दपञ्हो—अन्य साहित्य ।

पृष्ठ ४६५—४९५

सातवाँ अध्याय

बुद्धघोष-युग

(४००ई० से ११००ई० तक)

अट्ठकथा-साहित्य—अट्ठकथा-साहित्य का उद्भव और विकास—अट्ठकथा-साहित्य, संस्कृत भाष्य और टीकाओं से तुलना—अट्ठकथाओं की कुछ सामान्य प्रवृत्तियाँ—पालि त्रिपिटक के तीन बड़े अट्ठकथाकार—बुद्धदत्त—बुद्धघोष—धम्मपाल—बुद्धदत्त—जीवन-वृत्त और रचनाएँ—अभिधम्मावतार—रूपारूपविभाग—विनय-विनिच्छय—उत्तर-विनिच्छय—बुद्धघोष—जीवन-वृत्त—रचनाएँ—विसुद्धिमग्गो—समन्तपासादिका—कंखावितरणी—सुमंगलविलासिनी—पपञ्चसूदनी—सारत्थपकासिनी—मनोरथपूरणी—परमत्थजोतिका—अट्ठसालिनी—सम्मोहविनोदनी—धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक और पट्ठान, इन पाँच अभिधम्म-ग्रंथों पर अट्ठकथाएँ (पञ्चुप्पकरणट्ठकथा)—धम्मपदट्ठकथा—जातकत्थवण्णना—बुद्धघोष की अन्य रचनाएँ—पालि साहित्य में बुद्धघोष का स्थान—धम्मपाल—जीवन-वृत्त—रचनाएँ—विमानवत्थु-अट्ठकथा—पेतवत्थु-अट्ठकथा—थेर-थेरी गाथाओं पर अट्ठकथाएँ—उदान, इतिवुत्तक और चरियापिटक पर अट्ठकथाएँ—अनिरुद्ध और उनका अभिधम्मत्थसंगह—अभिधम्मत्थसंगह के सिद्धान्तों का संक्षिप्त विश्लेषण—बुद्धघोष-युग के अन्य अट्ठकथाकार, उपसंहार। पृष्ठ ४९६–५३६

आठवाँ अध्याय

बुद्धघोष-युग की परम्परा अथवा टीकाओं का युग

(११०० ई० से वर्तमान समय तक)

सिंहली भिक्षु सारिपुत्त और उनके शिष्यों की टीकाएँ—बर्मी पालि साहित्य—इस युग की अन्य रचनाएँ, उपसंहार। पृष्ठ ५३७–५४६

नवाँ अध्याय

वंश-साहित्य

'वंश' शब्द का अर्थ और इतिहास से भेद—वंश-ग्रंथ—दीपवंस—महावंस—चूलवंस—बुद्धघोसुप्पत्ति—सद्धम्मसंगह—महाबोधिवंस—थूपवंस—

अत्तनगलुविहारवंस—दाठावंस—छकेसधातुवंस—गन्धवंस—सासनवंस, उपसंहार । पृष्ठ ५४७–५८२

दसवाँ अध्याय

काव्य, व्याकरण, कोश, छन्दःशास्त्र, अभिलेख आदि

विषय-प्रवेश—काव्य-ग्रंथ—अनागतवंस — तेलकटाहगाथा —जिनालंकार—जिनचरित—पज्जमधु — सद्धम्मोपायन — पञ्चगतिदीपन — लोकप्पदीपसार या लोकदीपसार—रसवाहिनी — बुद्धालंकार—सहस्सवत्थुप्पकरण — राजाधिराजविलासिनी — पालि का व्याकरण-साहित्य और उसके तीन सम्प्रदाय—कच्चान-व्याकरण और उसका सहायक साहित्य—मोग्गल्लान-व्याकरण और उसका सहायक साहित्य—अग्गवंस-कृत सद्दनीति और उसका सहायक साहित्य—अन्य पालि व्याकरण—पालि कोश—अभिधानप्पदीपिका—एकक्खरकोस—छन्दः शास्त्र—वुत्तोदय आदि—काव्य-शास्त्र—सुबोधालंकार—पालि का अभिलेख-साहित्य, उपसंहार । पृष्ठ ५८३–६४३

उपसंहार

भारतीय वाङ्मय में पालि-साहित्य का स्थान—पालि और विश्व-साहित्य । पृष्ठ ६४४–६४७